डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

सा.अ./ 18 सितंबर 2021

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2020 अर्पण समारोह संपन्न
साहित्य परिवर्तन की अहिंसक प्रक्रिया है – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

नई दिल्ली 18 सितंबर 2021। साहित्य अकादेमी द्वारा शनिवार को साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2020 प्रदान किए गए। कमानी सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात कवि और साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि प्रकृति ने सबको कुछ न कुछ विशेष दिया है और लेखकों को तीन योग्यताएँ संवेदनशीलता, परकाया प्रवेश और अभिव्यक्ति की विशेष क्षमता प्रदान की है। इन्हीं विशेष योग्यताओं के कारण वह स्व से अन्य को जोड़ता है और दूसरे की वेदना का प्रवक्ता बन जाता है। लेखक यह अपना धर्म समझकर करता है। इतनी शक्तियाँ जब प्रकृति ने दी हैं तो लेखक को कुछ विशेष करना चाहिए। आज जब पूरी दुनिया हिंसा से जूझ रही है, तब लेखक को अहिंसा का रास्ता अपनाकर समाज का मार्गदर्शन करना चाहिए। साहित्य परिवर्तन की अहिंसक प्रक्रिया है। आगे उन्होंने बिगड़ते पर्यावरण पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि विकास जब प्रकृति में हस्तक्षेप करेगा तो वह विनाश का कारण बनेगा। अगर हमारा लक्ष्य सुख और शांति है, जो कि मनुष्यता का लक्ष्य होना चाहिए, इसलिए एक बुद्धिजीवी के रूप में लेखक को मनुष्य धर्मी ही नहीं बल्कि प्राणिमात्र धर्मी और पर्यावरण धर्मी भी होना चाहिए। उन्होंने सभी को अपनी मातृभाषा को बचाने और चिंता करने की जरूरत पर भी जोर दिया।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि आज जब यह पुरस्कार दिया जा रहा है तब आप हमारे भारत की हर भाषा के श्रेष्ठ साहित्य लिखने वाले लेखकों को यहाँ देख सकते हैं। यह भारत की बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक प्रतिभा का सम्मान है यह सांस्कृतिक उच्चता और मानवधर्मी विचारों के सुंदर संयोग का सम्मान है। यह श्रेष्ठ साहित्य विभिन्न विधाओं में अपनी विविध वर्णी आभा के साथ स्थानीय और वैश्विक यथार्थ को हमारे सामने लाने का बड़ा कार्य कर रहा है। यह सम्मान उसी श्रेष्ठ का है।

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने समापन वक्तव्य दिया। उन्होंने भारत की बहुभाषिकता और बहुवचनात्मकता को पूरी दुनिया में अनूठा कहा। उन्होंने कहा कि साहित्यकार सामान्य जन की पीड़ा का प्रवक्ता होता है। यह सम्मान ऐसे ही साहित्यकारों का है। साहित्य अकादेमी पैसा नहीं प्रतिष्ठा देती है।

स्वागत भाषण देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवास राव ने कहा कि भारत एक है भले ही अनेक भाषाओं में बोलता है। साहित्य और भाषा में वह क्षमता होती है जो अपनी भाषा, सभ्यता, संस्कृति और सामाजिक यथार्थ को अपने साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं।

आज पुरस्कृत हुए लेखक थे अपूर्व कुमार शइकीया (असमिया), शंकर (बाङ्ला), (स्व.) धरणीधर औवारि (बोडो), अरुंधति सुब्रमण्यम (अंग्रेज़ी), हरीश मीनाश्रु (गुजराती), अनामिका (हिंदी), एम. वीरप्पा मोइली (कन्नड), (स्व.) हृदय कौल भारती (कश्मीरी), आर.एस. भास्कर (कोंकणी), कमलकान्त झा (मैथिली), ओमचेरी एन.एन. पिल्लई (मलयाळम्), इरुङ्गबम देवेन सिंह (मणिपुरी), शंकर देव ढकाल (नेपाली), यशोधरा मिश्रा (ओड़िआ), गुरदेव सिंह रूपाणा (पंजाबी), भंवरसिंह सामौर (राजस्थानी), महेशचन्द्र शर्मा गौतम (संस्कृत), रूपचंद हांसदा (संताली), जेठो लालवाणी (सिंधी), इमाइयम (तमिळ), निखिलेश्वर (तेलुगु), हुसैन–उल–हक (उर्दू)।

पंजाबी और बंगाली के विजेता पुरस्कार लेने नहीं आ पाए और बोडो, कश्मीरी तथा मलयालम के विजेताओं के परिजनों ने पुरस्कार ग्रहण किए।

(के. श्रीनिवासराव)

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

साहित्य अकादेमी

लेखक सम्मिलन
19 सितंबर 2021, नई दिल्ली

प्रेस विज्ञप्ति

22 साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेताओं ने 'लेखक सम्मिलन' कार्यक्रम में भाग लिया और अपने रचनात्मक लेखन–अनुभवों को साझा किया। बैठक की अध्यक्षता अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने की।

असमिया पुरस्कार विजेता अपूर्व कुमार शइकीया ने कहा कि मैं भाषा को एक दोधारी हथियार के रूप में मानता हूँ, जो दमन और मुक्त करने के लिए, स्पष्टता तथा उलझन में डालने वाली दोनों होती है। इसलिए भाषा का बर्ताव लेखक को बहुत ज़िम्मेदारी के साथ करना चाहिए। यही वह माध्यम है जो नाज़ुक मानवीय अनुभवों को भी दर्शाती है।

बाङ्ला पुरस्कार विजेता शंकर ने कहा कि लेखन एक महान व्यवसाय है, किंतु आपके सगे–संबंधी आपको लेखक के रूप में देखना नहीं चाहेंगे, क्योंकि यह अनिश्चिताओं, मुश्किलों भरी एक एकांत यात्रा है। लेखक इसीलिए अपनी यात्रा के आनंद और यंत्रणा का स्वयंभोक्ता होता है।

अंग्रेज़ी पुरस्कार विजेता अरुंधति सुब्रमण्यम ने कविता की शक्ति के अनेक स्रोतों और स्वरूपों का ज़िक्र किया। उन्होंने कहा कि यदि उनसे कोई प्रश्न करेगा कि 'कविता ही क्यों' तो उनका उत्तर होगा, वे केवल कविता ही लिखना पसंद करेंगी। सूचना की अधिकता की दुनिया में, कविता हमें रहस्य के महत्त्व की याद दिलाती है। कविता ही है जो शोर के अपरंपार कोलाहल में एक पॉज़ का स्पेस निर्मित करती है।

गुजराती पुरस्कार विजेता हरीश मीनाश्रु ने कहा कि कवियों को आमतौर पर अपने काम के बारे में बात करना कठिन लगता है। मेरा मानना है कि यह एक पारखी पाठक का विशेषाधिकार है। आदर्श रूप से कवि को अपनी कविता के बारे में बात करने से बचना चाहिए।

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

हिंदी पुरस्कार विजेता अनामिका ने कहा कि इतिहास की भूलों से सीखकर हम यह सहज ही कह सकते हैं कि संरचनागत परिवर्तन भी उतने ही जरूरी हैं जितनी आत्मक्रांति! आत्मक्रांति के बाद हुए संरचनागत परिवर्तन भी स्थायी नहीं होंगे पर मनुष्यता सजग रही तो इन्हें दीर्घजीवी अवश्य किया जा सकता है।

कन्नड पुरस्कार विजेता एम. वीरप्पा मोइली ने कहा कि यह महाकाव्य 'बाहुबली' उस व्यक्ति की कहानी है, जो जीतने के बाद अपना सब कुछ त्याग देता है तथा जो लोगों की इच्छाओं की पूर्ति हेतु अपने वस्त्रों तक का भी दान कर देता है। उनकी कथा बताती है कि समस्त विश्व का क्या धर्म होना चाहिए – समस्त प्रकार की 'इच्छाओं' को जड़ से उखाड़ फेंकना तथा सत्य की खोज करना। अहिंसा इस कृति का मूल स्वर है।

कोंकणी पुरस्कार विजेता आर.एस. भास्कर ने कहा कि मेरी कविता रोज़मर्रा की ज़िन्दगी के चित्रों को चित्रित करती है। मैं अपनी कविता के लिए परिचित और सहज रूप से पहचाने जाने योग्य परिवेश और अपने आसपास जो कुछ भी हो रहा है, उससे विषय–वस्तु को दर्शाने की कोशिश करता हूँ।

मैथिली पुरस्कार विजेता कमलकान्त झा ने अपने भाषण में कहा मेरी पुस्तक की कहानी में, मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि पेड़ पौधे सिर्फ लगा देना ही काफी नहीं है, अपितु उसकी देखरेख भी उतना ही आवश्यक है, अन्यथा उनमें कुछ तो रोग ग्रस्त होकर सूख जाएँगे और कुछ अस्वस्थ होकर रह जाएँगे, जिससे उनका विकास रुक जाएगा। उन्होंने कहा कि पर्यावरण की चिंता करना आज के लेखक के चिंतन का आवश्यक हिस्सा होना चाहिए।

मलयाळम् पुरस्कार विजेता ओमचेरी एन.एन. पिल्लई ने कहा कि *आक्सामिकम ओमचेरियुते ओरममककुरिप्पुकल* यह कृति उनके जीवन के आठ दशकों की आत्मकथा है, जोकि उनके बचपन से शुरू होती है, जो पाठकों को स्वयं के समक्ष आने वाली चुनौतियों का सामना कर उन्हें अवसर में बदलने की कला के लिए प्रेरित करती है।

मणिपुरी पुरस्कार विजेता इरुङ्गबम देवेन सिंह ने कहा कि कविता का अनुमान लगाना असंभव है – आप कहीं से आरंभ करते हैं तथा कहीं और पहुँच जाते हैं। मुझे लगता है कि एक कवि की यात्रा कभी एकरैखिक नहीं होती। कविता आगे बढ़ती है। तथा अपने अतीत से भी जुड़ी रहती है। कविता और कवि हर समय सीमाओं का अतिक्रमण करने का प्रयास करते हैं।

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in

डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

नेपाली पुरस्कार विजेता शंकर देव ढकाल ने कहा कि एक लेखक होने के नाते, मैं कहानी का पात्र बनकर तथा उस कहानी में जीने की कोशिश करता हूँ। फिर, मैं तुरंत ही स्वयं को अलग कर लेता हूँ तथा लिखने लगता हूँ।

ओड़िआ पुरस्कार विजेता यशोधरा मिश्रा ने कहा कि मुझे नहीं लगता कि एक लेखक कभी स्वयं से पूछता है कि वह क्यों और किसके लिए लिख रहा है? कम से कम मैंने ऐसा कभी नहीं किया। जहाँ तक मुझे याद है, दो पंक्तियाँ बनाने में मुझे आनंद मिलता था तथा इसमें मुझे बहुत आनंद मिलता है। मैं ऐसी कविताएँ लिखने की कोशिश करती हूँ जिससे मैं तो आनंदित होऊँ ही, अन्य लोगों को भी आनंद आ सके। यह आनंद केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि आनंद का वृहत्तर अर्थ है, इसे आप कविताएँ पढ़ कर ही समझ सकेंगे।

राजस्थानी पुरस्कार विजेता भंवरसिंह सामौर ने अपनी पुरस्कृत पुस्तक पर चर्चा करते हुए कहा कि संस्कृति अतीत के सार्थक क्षणों का पुनर्स्मरण, वर्तमान की प्रेरणा एवं भविष्य का दर्शन होता है। वह समाज को नकारात्मकता से सकारात्मकता की तरफ ले जाती है। संस्कृति की यह ताकत भाषा के माध्यम से साहित्य में प्रकट होती है। अन्य सारे कार्य–कलाप मनुष्य को भूतपूर्व बनाते हैं। केवल साहित्य ही मनुष्य को अभूतपूर्व बनाता है।

संस्कृत पुरस्कार विजेता महेशचन्द्र शर्मा गौतम ने अपने भाषण में कहा कि मुझे ऐसा लगा कि संस्कृत केवल एक भाषा भर नहीं है बल्कि पहले यह समाज को प्रतिबिम्बित करती रही है, इसलिए दूसरी भाषाओं की तरह इस भाषा में भी वर्तमान युग के सामान्य लोगों के जीवन से जुड़ी समस्याओं की बात होती है या होनी चाहिए, जिससे लोगों को यह लगे कि संस्कृत लोकव्यवहार की भाषा है। यही सोचकर मैंने 'वैशाली' उपन्यास की रचना की है।

संताली पुरस्कार विजेता रूपचंद हांसदा ने अपने भाषण में कहा कि *गुर दाक' कासा दाक'* की कविताएँ विभिन्न स्वाद तथा आधुनिक शैली में लिखी गई हैं। *गुर दाक' कासा दाक'* का अर्थ 'खट्टा पानी मीठा पानी' है। मुझे आशा कि पाठक इस पुस्तक की कविताओं का खट्टा और मीठा स्वाद ले पाएँगे।

सिंधी पुरस्कार विजेता जेठो लालवाणी ने अपने भाषण में कहा कि मेरा मानना है कि रचनाकार का बाहर के प्रत्येक स्पन्दन से संबंध है। यह संबंध जितना विचारधारात्मक, भावनात्मक माना जाता है, उतना ही जैविक आधार वाला भी माना जाना चाहिए। रचनाकार के अंतःकरण में संचित संवेदनाओं को लेखक की विविध जीवन–परिस्थितियों तथा जैविक स्थितियों से असंपृक्त और संबंधहीन नहीं मानना चाहिए, बल्कि इन दोनों के तालमेल से रचनाकार का अंतर्बाह्य व्यक्तित्व तैयार होता है।

डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

तमिळ पुरस्कार विजेता इमाइयम ने कहा कि मेरे लेखन का उद्देश्य मानव जीवन से जुड़ी समस्त महानता और पश्चात्ताप तथा उन सभी क्षणों को, जब मनुष्य प्रकृति से हार जाता है तथा जब जीवन में खालीपन हो जाता है, को समझने का प्रयास करना है।

तेलुगु पुरस्कार विजेता निखिलेश्वर ने अपने भाषण में कहा कि जो कविता पीड़ा और विरोध को जन्म देती है वह कवि के जीवन और अनुभवों से स्वाभाविक रूप से जुड़ी होती है।

उर्दू पुरस्कार विजेता हुसैन–उल–हक़ ने अपने भाषण में कहा कि ''अमावस में ख़्वाब'' भारतीय समाज का मुखपत्र है। इसमें प्रस्तुत पात्र किसी एक धर्म या किसी क्षेत्र विशेष के नहीं हैं। उनके चरित्र पूरे भारत के बदलते राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य के संवाहक हैं और मुझे लगता है कि इस उपन्यास में पूरे भारत को रचनात्मक स्तर पर महसूस किया गया है।

श्री शंकर (बाङ्ला), श्री ओमचेरी एन.एन. पिल्लई (मलयाळम्) तथा श्री गुरदेव सिंह रूपाणा (पंजाबी) कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके। श्री शंकर तथा श्री ओमचेरी एन.एन. पिल्लई के व्याख्यान श्रोताओं के मध्य बाँटे गए।

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने समस्त पुरस्कार विजेताओं तथा साहित्यप्रेमियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया।

(के. श्रीनिवासराव)

रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone : +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax : +91-11-2338 2428
E-Mail : secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website : http//www.sahitya-akademi.gov.in